उपनिषदों में वेदान्त दर्शन

शालिनी जोशी (व्याकरण)

UGC- NET, आचार्य

दर्शन से अभिप्राय - देखना अर्थ में प्रयुक्त दृश् धातु से ल्यूट् प्रत्यय करने पर 'दर्शन' शब्द निष्पन्न होता है। (अष्टाध्यायी ०३/०३/११४) नपुंसके भावे क्त

आचार्य पाणिनि के अनुसार ल्यूट् प्रत्यय का प्रयोग भाव, करण, एवं अधिकरण तीन अर्थों में होता है। (ल्यूट् च ०३/०३/११५) (करणाधिकरणयोश्च ०३/०३/११७)

यहां भाव से से तात्पर्य पूर्णतया शुद्ध धातु के अर्थ से है।

इस तरह दर्शन शब्द का अर्थ हुआ - देखना।

वह विद्या, ज्ञान अथवा उपकरण (साधन) जिसके द्वारा किसी विषय या वस्तु को देखा जाए या जाना जाए अथवा आधारभूत वह वस्तु जिसमें किसी को देखा जाए।

दर्शन का मनुष्य जीवन के साथ अत्यंत ही घनिष्ठ संबंध रहा है, क्योंकि मानव जीवन का कोई भी पक्ष दर्शन की परिधि से बाहर नहीं हो सकता।

भारतीय दर्शन:- भारतीय दर्शन विषयक विचारधाराओं को मुख्यतः दो भागों में विभाजित किया गया है।

(०१) आस्तिक दर्शन - वे दर्शन ग्रन्थ जिसमें वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार किया गया है।

आस्तिक दर्शनों की संख्या छः मानी गई पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा (वेदांत), सांख्य, योग, न्याय और वैशेषिक दर्शन।

(०२) नास्तिक दर्शन:- जिसमें वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार नहीं किया गया उन्हें नास्तिक दर्शन की संज्ञा दी गई।

नास्तिक दर्शनों के अन्तर्गत मुख्य रूप से चार्वाक,जैन दर्शन, और बौद्ध दर्शनों की गणना की जाती है।

वेदान्त दर्शन के मूल स्रोत:-

वेदान्त की तीन शाखाएँ सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं, (१) अद्वैत वेदान्त, (२) विशिष्ट अद्वैत और (३) द्वैत।

आदि शंकराचार्य, रामानुज और मध्वाचार्य को क्रमशः इन तीनों शाखाओं का प्रवर्तक माना गया है। इनके अलावा भी ज्ञानयोग की अन्य शाखाएँ हैं। ये शाखाएँ अपने प्रवर्तकों के नाम से जानी जाती हैं जिनमें भास्कर, वल्लभ, चैतन्य, निम्बार्क, वाचस्पति मिश्र, सुरेश्वर और विज्ञान भिक्षु शामिल है।[1]

चारों वेदों के चार अलग-अलग महावाक्य है।

ऋग्वेद में " प्रज्ञानं ब्रह्म" , यजुर्वेद में " अहं ब्रह्मास्मि" सामवेद में “ तत्त्वमसि" तथा अथर्ववेदे " में अयमात्मा ब्रह्म" यह

महावाक्य सुशोभित हैं । ये महावाक्य वेदांत दर्शन के आधार स्तम्भ हैं ।[2]

विश्व का सबसे प्राचीन ग्रंथ ऋग्वेद में वेदान्त के मूल स्रोत के दर्शन होते हैं। हालांकि ऋग्वेद में सुव्यवस्थित रूप से प्रस्तुत नहीं किया गया तथापि वहां इसके बीज अवश्य देखें जा सकते हैं।

विश्व की संरचना एवं संचालन के लिए ब्रह्म, ईश्वर, और जीव इन तीनों तत्वों को स्पष्ट रूप से स्वीकार किया गया है।

पुरुष सूक्त के प्रारंभ में आदि पुरुष का वर्णन वेदान्त के ब्रह्म से सामर्थ्य रखता है।

सहस्रशीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात ।

स भूमिं विश्वतो वृत्तत्यतिष्ठदशाङ्गुलम् ॥1॥ [3]

इसी प्रकार आदिपुरुष से उत्पन्न विराट पुरुष जो वेदान्त का ईश्वर है तथा उसका आश्रय लेकर उत्पन्न हुआ, पुरुष ही जीवात्मा अर्थात वेदान्त का जीव है।

तस्मादविराळजयत् विराजो अधिपुरुषः ।

स जातो अत्यरिच्यत् पश्चादभूमिमथो पुरः ॥ [4]

अथवा –

द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं विश्वं परिषस्वजाते ।

तयोरन्यः पिप्पलं स्वाद्ववत्यनश्नन्न्यो अभिचाकशीति ।। [5]

यहां पर वर्णित विश्व, वेदान्त की माया तथा पिप्पल उसके भोगने योग्य पदार्थ है। भोगने वाला पक्षी वेदान्त का 'जीव' तथा न भोगने वाला दूसरा पक्षी ईश्वर है।

अतः ऋग्वेद में वेदान्त के तत्त्वों को सहज ही स्वीकार किया जा सकता है।

वेदान्त दर्शन का चिन्तन वैदिक संहिताओं एवं ब्राह्मण ग्रंथों से प्रारंभ हो चुका था, इतना तो अवश्य स्वीकार किया जा सकता है।

ऋग्वेद के नासदीय सूक्त में वेदान्त की माया के रजस् एवं तमोगुण का उल्लेख हुआ है।

नासीद्रजो नो व्योमा परोयत् [6]

तम आसीत् तमसा गूळ्हमग्रे ऽप्रकेतं सलिलं सर्वमा इदम्। [7]

इसी सूक्त के अग्रिम मन्त्र में प्रयुक्त 'सत्' को विद्वानों ने 'सत्व' गुण के अर्थ में प्रयुक्त माना है।

सतो बन्धुमसति निरविन्दन् [8]

उपनिषदों में वेदान्त का दर्शन:–

सभी उपनिषदों ने केवल ब्रह्म को ही उजागर किया है। वेदान्त दर्शन का विषय ही 'ब्रह्म ओर जीव का ऐक्यभाव' है।

सम्पूर्ण संसार ब्रह्म में ही स्थित है। जतत ब्रह्म में ही स्थित है। चारों पुरुषार्थों में परम पुरुषार्थ 'मोक्ष' को ही माना गया है। उपनिषदों में मोक्ष को ही ब्रह्म से प्रतिपादित किया गया है।

इसलिए ऐतरेयोपनिषद् में कहा गया है –

"एष ब्रह्मैष इन्द्र एष प्रजापतिरेते सर्वे देवा इमानि च पञ्चमहाभूतानि पृथिवी वायुराकाश आपो ज्योतींषीत्येतानीमानि च क्षुद्रमिश्राणीव।

बीजानीतराणि चेतराणि चाण्डजानि च जारुजानि च स्वेदजानि चोद्भिज्जानि चाश्वा गावः पुरुषा हस्तिनो यत्किञ्चेदं प्राणि जङ्गमं च पतत्रि च यच्च स्थावरं सर्वं तत्प्रज्ञानेत्रं प्रज्ञाने प्रतिष्ठितं प्रज्ञानेत्रो लोकः प्रज्ञा प्रतिष्ठा प्रज्ञानं ब्रह्म ॥"[9]

प्रज्ञान' ही 'शाश्वत ब्रह्म' है।

उपनिषद् अध्यात्म विद्या अथवा ब्रह्मविद्या को कहते हैं।

वेद का अन्तिम भाग होने से इसे वेदान्त भी कहा जाता है।

"वेदान्तो नाम उपनिषत् प्रमाणम्" परिभाषा के अनुसार उपनिषदों को प्रमाणरूप में मानकर चलने वाला शास्त्र वेदान्त दर्शन माना गया है।

इस दृष्टि से उपनिषदों का स्वतः ही महत्त्व सिद्ध हो जाता है।

उपनिषद् शब्द से ज्ञानकाण्ड के विशाल दार्शनिक साहित्य का बोध होता है।

उपनिषदों की संख्या २२० के लगभग है तो क्या सभी में वेदान्त दर्शन के सिद्धांतों का उल्लेख हुआ है? किन्तु इस सम्बन्ध में इतना कहा जा सकता है कि उपलब्ध उपनिषदों में से २० उपनिषद् सर्वाधिक प्राचीन माने गए हैं।

ब्राह्मण ग्रंथों के अन्त में जुड़े हुए उपनिषद् सर्वाधिक प्राचीन कहें जा सकते है ।

जिनकी संख्या लगभग छः है।

१. ऐतरेय उपनिषद् (ऐतरेय ब्राह्मण – ऋग्वेद सम्बंधित)

२. कौषीतकि उपनिषद् (कौषीतकि ब्राह्मण – ऋग्वेद)

३. तैत्तिरीय उपनिषद् (कृष्ण यजुर्वेद तैत्तिरीय आरण्यक)

४. बृहदारण्यकोपनिषद् (शुक्ल यजुर्वेद शतपथ ब्राह्मण)

५.छान्दोग्योपनिषद् (सामवेद की ताण्ड्यशाखा से छान्दोग्य ब्राह्मण)

६. केनोपनिषद् (सामवेद की तवलकार शाखा से जुड़े जैमिनीय ब्राह्मण)

यद्यपि ये सभी छः उपनिषद् भारतीय दर्शन के विकास की प्रारम्भिक अवस्था को प्रदर्शित करते हैं तथापि इन सभी में वेदान्त दर्शन अपने शुद्ध एवं मूलरूप में सुरक्षित है।

उपसंहार

वेदान्त दर्शन भारतीय चिन्तन परम्परा का सर्वोच्च शिखर है। इसका मूल उद्देश्य ब्रह्म और जीव के ऐक्यभाव को प्रतिपादित करना है। वेदान्त का आधार वेदों के महावाक्य और उपनिषदों के गूढ़ दार्शनिक विचार हैं, जो मानव जीवन के परम पुरुषार्थ मोक्ष की प्राप्ति का मार्ग प्रशस्त करते हैं। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त से लेकर उपनिषदों तक ब्रह्म की सत्ता, जीव की वास्तविकता तथा जगत की माया का सूक्ष्म विवेचन मिलता है।

आदि शंकराचार्य, रामानुज और मध्वाचार्य जैसे आचार्यों ने अपनी-अपनी व्याख्या द्वारा वेदान्त को और भी समृद्ध बनाया। अद्वैत, विशिष्टाद्वैत और द्वैत जैसी धाराएँ भले ही विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत करती हों, लेकिन इन सबका अंतिम लक्ष्य आत्मा और परमात्मा का गूढ़ सम्बन्ध ही है।

उपनिषदों को ही “वेदान्त” कहा गया है, क्योंकि वेद का अन्तिम और सारभूत ज्ञान उपनिषदों में निहित है।...

सन्दर्भ बिन्दु

१. राधाकृष्णन् इंडियन फिलासफी, भाग 1-2

२. "महावाक्य तात्पर्य विचार"

३.ऋग्वेद १०,९०/०१

५. ऋग्वेद १०/९०/५

५. ऋग्वेद ०१/१६४/२०

६.ऋग्वेद १०/१२९/१

७.ऋग्वेद १०/१२९/३

८.ऋग्वेद १०/१२९/४

९.ऐतरेयोपनिषद् ३/१/१